# अर्न्तराष्ट्रीय संगोष्ठी

# डिजिटल युग में स्व-अन्वेषणः श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के परिप्रेक्ष्य में

## 25 - 27 नवम्बर, 2017

# प्रतिवेदन

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
(NAAC द्वारा 'A+' श्रेणी प्रत्यायित)

Scanned by CamScanner

# अर्न्तराष्ट्रीय संगोष्ठी

## डिजिटल युग में स्व-अन्वेषणः श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के परिप्रेक्ष्य में

*25 - 27 नवम्बर, 2017*

**Report**

श्रीमद्भगवद्गीता एक अद्वितीय, कालजीय ग्रंथ है जिसका अध्ययन, मनन एवं निदिध्यासन मनुष्य को समस्त द्वन्द्वों से पार करवा देता है । गीता का अनेक भाषाओं में अनुवाद तथा अनेक विद्वानों द्वारा इसकी व्याख्या इस बात का सशक्त प्रमाण है कि पूरे विश्व में यह ग्रंथ लोकप्रिय रहा है तथा सर्वाधिक पठित है । भारत के लोग भगवान् कृष्ण की दिव्यवाणी होने के कारण इसमें पूर्ण आस्था रखते हैं तथा इसमें प्रतिपादित ज्ञान को ग्रहण करने के लिए सदैव जिज्ञासु रहते हैं । 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' श्लोक से आरम्भ होने वाली गीता कुरुक्षेत्र की भूमि का गौरव है, अतएव यहाँ प्रतिवर्ष गीता-जयन्ती उत्सव मनाया जाता है जिस के दौरान कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की जाती है । इसमें सुदूर स्थलों से आए विद्वान् गीता की जीवन के विभिन्न पक्षों में प्रासंगिकता सम्बन्धी बिन्दुओं पर चर्चा करते हैं ।

2017 की अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'डिजिटल युग में स्व-अन्वेषण गीता-दर्शन के परिप्रेक्ष्य में' इस इन्टर डिसिप्लनरी विषय के अन्तर्गत वर्तमान अन्तः-सम्बद्ध विश्व में गीता; मनुष्य-तकनीकी द्वन्द्व एवं गीता दर्शन; गीता के पवित्र स्थलों में स्व-पर्यटन; कॉरपोरेट गवर्नेंस एवं गीता; गीता में प्रबन्धन-विचार तथा गीता का कालातीत ज्ञान-इन प्रमुख बिन्दुओं पर विचार करने के लिए शोधपत्र आमन्त्रित किए गए । कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पर्यटन एवं होटल प्रबन्धन,



Scanned by CamScanner

संस्कृत-पालि-प्राकृत, दर्शनशास्त्र तथा विश्वविद्यालय स्कूल ऑफ मैनेजमेंट विभागों के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित इस संगोष्ठी में अंग्रेजी, हिन्दी व संस्कृत भाषाओं के माध्यम से सौ से अधिक विद्वानों एवं शोधार्थियों ने नामांकन करवाया तथा शोधपत्र प्रस्तुत किए ।

तीन-दिवसीय संगोष्ठी का भव्य उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ कोविन्द के कर-कमलों द्वारा 25.11.2017 को हुआ तथा समापन 27.11.17 को विराट् सन्त सम्मेलन के साथ सम्पन्न हुआ ।

तीन दिवसीय संगोष्ठी में विभिन्न विद्वानों ने उक्त विषयों पर मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, व्यावहारिक, नैतिक, धार्मिक दृष्टि से अध्ययन कर अपने विचार रखे । विचार-मंथन के उपरान्त निम्नलिखित ज्ञान-रत्न प्राप्त हुए :

**1. आधुनिक युग में प्राचीन काल की अपेक्षा गीता ज्ञान की अधिक उपादेयता :**

आधुनिक डिजिटल युग में समस्त विश्व इन्टरनेट के माध्यम से परस्पर जुड़ गया है । प्रतिपल लाखों लोग फेसबुक, व्हाट्सैप ट्विटर, इन्स्टाग्राम जैसे संचार-माध्यमों के द्वारा अपने विचारों एवं जीवन्त पलों का आदान-प्रदान करते रहते हैं । परन्तु डिजिटल-दौड़ की 365x24x7 गति के चलते आध्यात्मिक अभिरुचि का स्थान भौतिकवाद एवं स्वार्थवाद ने ले लिया है । एल० ई० डी० की चकाचौंध से भरमाया मनुष्य मानव-सम्बन्धों एवं सरल-जीवन-शैली को बहुत पीछे छोड़ आया है। उसे स्वयं की तथा अपनों के अपनेपन की तलाश है, परन्तु मार्ग का पता नहीं है । ऐसे में श्रीमद्भगवद्गीता का ज्ञान-कर्म-भक्ति-योग एकमात्र सम्बल है जो पथ-प्रदर्शक की तरह भटके हुए पथिक को मार्ग दिखाता



Scanned by CamScanner

है । गीता की उपादेयता को प्रदर्शित करते हुए विद्वानों ने प्रमुखतः निम्न विचार प्रस्तुत किए :

**(i) यज्ञ :** हमारे शास्त्रों में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है। यज्ञ की संस्कृति पर्यावरण की शुद्धि, समर्पण की भावना एवं रोगमुक्त जीवन के लिए बहुत महत्त्व रखती है । गीता में ब्रह्मयज्ञ को परम यज्ञ कहा गया है जो मनुष्य को भोग के मार्ग से हटाकर निष्काम कर्मयोग अथवा त्याग के मार्ग पर ले जाने में समर्थ है । भारतीय शास्त्रों में प्रतिपादित त्यागपूर्वक भोग की संस्कृति ही विश्व को तथा प्राकृतिक शक्तियों को बचाए रखने में समर्थ है । गीता में जो मनुष्यों को यज्ञ से अवशिष्ट का उपभोग करने की बात कही गई है वह प्राकृतिक-संसाधनों के सीमित उपभोग का संकेत देती है ।

**(ii) आहार-विहार :** गीता के अनुसार संतुलित भोजन एवं संयमित विहार स्वस्थ जीवन शैली के आधारभूत तत्त्व कहे गए हैं। सीमित, शुद्ध भोजन मनुष्य की स्वस्थ चित्तवृत्ति का निर्माण करता है। इसी प्रकार समय पर सोना-जागना, संयमित चेष्टाएँ जीवन में स्वास्थ्य एवं सफलता की सीढ़ी हैं जो आज की युवा पीढ़ी के लिए विशेष रूप से उपादेय हैं ।

**(iii) कर्त्तव्य-बोध :** गीता के सोलहवें अध्याय में दैवी और आसुरी गुण तथा उनके फलों का वर्णन है । इसके अध्ययन से मनुष्य उचित एवं अनुचित अथवा शुभ और अशुभ में भेद करने में समर्थ हो जाता है जिससे उसे जीवन में सही-निर्णय लेने के लिए आवश्यक 'विवेक' की प्राप्ति होती है ।

**(iv) समभाव :** गीता में समत्व अर्थात् समभाव को ही योग कहा गया है । जीवन के हर क्षेत्र में मनुष्य यदि समत्व की प्रवृत्ति अपनाता है तो आधुनिक युग की विषमताओं से बड़ी आसानी से पार पा सकता है ।



Scanned by CamScanner

दूसरा प्रमुख विषय, जिस पर संगोष्ठी में चर्चा हुई, निम्नलिखित रहा :

2. **डिजीटल युग में मनुष्य-तकनीकी द्वन्द्व एवं गीता-दर्शन**

वर्तमान समय में तकनीकी-संचालित डिजिटल संसार ने मानव जीवन के लगभग हर पहलु को प्रभावित किया है । आज की भौतिकवादी दुनिया में धन और प्रसिद्धि प्राप्त करना मनुष्य का स्वभाव कन गया है और यह कभी न खत्म होने वाली वासना दिन -प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । हम भौतिक लाभ प्राप्त करने के लिए नैतिक मूल्यों को खोते जा रहे हैं । भौतिक प्रगति जीवन के परंपरागत तरीके को मात देते हुए मानवीय जीवन में भ्रम की स्थिति पैदा कर रही है । इस प्रकार डिजिटल युग ने मानव जाति को दुविधा की स्थिति में ला कर खड़ा कर दिया है ।

ऐसे में हमारी पारंपरिक सामाजिक और नैतिक व्यवस्था, सामाजिक आदर्शों के अधः पतन और विखंडन का अनुभव कर रही है । हमारे मानवीय सम्बन्ध बदल रहे हैं और पारिवारिक व्यवस्था प्रभावित हो रही है । व्यापक परिप्रेक्ष्य में, मनुष्य की प्रौद्योगिकी पर बढ़ती निर्भरता ने समग्रता में सामाजिक-सूत्र को भी प्रभावित किया है । यह निर्भरता एक मदान्धता के स्तर तक पहुंच गई है, जिसके कारण मनुष्य, दूसरे मनुष्यों से तो दूर हो ही रहा है साथ ही अपने आप से भी दूर होता जा रहा है । परिवार के अंदर बातचीत और संवाद की कमी के परिणामस्वरूप असंतोष, व्यक्तिवाद, चिंता, अवसाद और अपराध बढ़ रहा है । भौतिक सम्पन्नता और संसाधनों के बावजूद अकेलेपन की समस्या मनुष्य को विकारों की ओर खींच रही है ।

समय की आवश्यकता भौतिक जीवन से एक समग्र जीवन की तरफ मुड़ने की है । ऐसी स्थिति में भगवद्गीता मनुष्य को स्वयं को ढूंढने और दूसरों के



Scanned by CamScanner

साथ तालमेल बढ़ाते हुए समग्र जीवन की ओर प्रेरित करती है । भगवद्गीता में श्री कृष्ण और अर्जुन के बीच में संवाद के दौरान कई बिंदु उठाए गये हैं - जैसे कि मनुष्य के कार्यों की उपयोगिता और निरर्थकता, इस तेजी से चलने वाले जीवन का 'अंत' और जीवन के सुख-दु:ख, वेदनाएं और अन्य सांसारिक चिंताएँ । इन समस्याओं के समाधान के रूप में भगवद्गीता के सन्दर्भों पर विचार करते हुए सशक्त एवं स्वस्थ जीवन-प्रणाली की प्रेरणा दी गई है ।

**3. गीता के पवित्र स्थलों एवं आख्यानों में स्व-पर्यटन का अवसर :**

विश्व में आध्यात्मिक पर्यटन के लिए भारत का अनूठा स्थान है । यहाँ के पर्वत, नदियाँ, वन आदि स्थल केवल अपनी नैसर्गिक शोभा के लिए नहीं जाने जाते अपितु प्रत्येक के साथ जुड़ी आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के लिए भी विख्यात हैं । इसी शृंखला में महाभारत की भूमि कुरुक्षेत्र विश्व-मानचित्र में पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि यहाँ मनुष्य को अध्यात्म का ज्ञान एवं विवेक देने वाला ग्रंथ गीता रचा गया है । कुरुक्षेत्र-पर्यटन के उद्देश्य से यहाँ मार्गशीर्ष मास में गीता जयन्ती के अवसर पर पर्यटकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से उत्सव मनाया जाता है । इसका प्रयोजन केवल भौतिक उन्नति का प्रदर्शन नहीं है अपितु ज्योतिसर जेसे स्थलों में भ्रमण के द्वारा आत्मान्वेषण भी है । इस सन्दर्भ में अहम प्रश्न यह है कि क्या भ्रमण आत्मान्वेषण के इच्छुक लोगों के लिए एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है और क्या कुरुक्षेत्र जैसे स्थानों के कारण भारत इस क्षेत्र में उचित गन्तव्य है? इन्हीं प्रश्नों के समाधान स्वरूप गीता-जयन्ती में आए लोगों से पूछताछ के आधार पर कुछ विद्वानों ने अपने शोध पत्रों में निम्न समाधान प्रस्तुत किए :



Scanned by CamScanner

**(i) शोभायात्रा :** गीता-जयन्ती के समय शोभा यात्रा में भाग लेने वाले स्थानीय एवं बाहर से आए हुए पर्यटक नि:सन्देह अध्यात्म की ओर प्रवृत्त होते हैं, जिससे उनकी जीवन-शैली में बदलाव आता है तथा उत्सवों के प्रति दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आता है । उत्सव केवल मनोरंजन, विनोद के लिए नहीं होते अपितु मनुष्य को आत्म-चिन्तन का अवसर देना भी उनका उद्देश्य होता है ।

**(ii) गीता-आरती :** आरती में गायन एवं भाव का मिश्रण मनुष्य के मन को स्थिर करने का सर्वोत्कृष्ट साधन है । ब्रह्मसरोवर पर सायंकालीन आरती का भव्य दर्शन स्व-पर्यटन का महत्त्वपूर्ण अंग है।

**(iii) गीता-श्लोक-गायन :** गीता के श्लोकों का सस्वर पाठ मनुष्य को तनाव एवं व्यस्त-जीवन से दूर ले जाने का साधन है । पूरे विश्व में गीता-श्लोक-गायन विश्वशान्ति का प्रतीक माना जाता है । कुरुक्षेत्र द्वारा भी 'ग्लोबल-गीता-चान्ट' में अठारह श्लोकों का संगीतमय गायन यू-ट्यूब पर उपलब्ध कराया गया है । इसका उद्देश्य देववाणी संस्कृत की आध्यात्मिक शक्ति से विश्व को अवगत कराना है ।

**(iv) अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं सन्त समागम :** गीता उत्सव में आए पर्यटकों को स्वान्वेषण के लिए संगोष्ठी में विद्वानों की चर्चा एवं साधुओं के समागम में उनके विचार सुनने का सुअवसर भी प्राप्त होता है ।

**(v) लाइट एण्ड साऊण्ड शो :** ज्योतिसर तीर्थ में आयोजित यह शो महाभारत की कथा को प्रस्तुत करता है जो पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है ।

कुरुक्षेत्र के दर्शनीय स्थलों का शान्त वातावरण यहाँ आने वाले पर्यटकों को सुकून प्रदान करता है ।

**4. श्रीमद्भगवद्गीता का दर्शन वर्तमान कारपोरेट गवर्नेंस के सिद्धान्तों में प्रतिबिम्बित :**



Scanned by CamScanner

कारपोरेट गवर्नेंस में विभिन्न नियम, प्रथाएँ और मार्गदर्शक सिद्धांत शामिल हैं जिनसे व्यावसायिक कर्मों द्वारा संसाधनों के कुशल उपयोग को प्रोत्साहित किया जा सके और जितना संभव हो सके व्यक्तियों, निगमों और समाज के हितों को एकत्र किया जा सके । इसमें कंपनी के प्रबंधन, उसके निदेशक-मण्डल, शेयरधारकों और अन्य हितधारकों के बीच सम्बन्ध का एक समुदाय शामिल है। इस प्रकार अच्छे Corporate Governance के प्रमुख पहलुओं में Corporate संरचना और संचालन की पारदर्शिता, शेयरधारकों के लिए प्रबंधकों का उत्तरदायित्व और कर्मचारियों, लेनदारों आपूर्तिकर्त्ताओं और स्थानीय समुदायों के प्रति प्रबन्धकों का उत्तरदायित्व शामिल हैं ।

संक्षेपत: Corporate Governance में कंपनियाँ खुले और ईमानदार ढंग से संचालन करती हैं, जो कंपनी के नैतिक उत्थान के द्वारा कंपनी को उत्तरदायी एवं पारदर्शी बनाता है । Corporate Governance में नैतिक व्यापारिक मूल्यों के लिए प्रतिबद्धता होती है और शक्ति का प्रयोग करने के लिए मानक-रूपरेखा होती है । श्रीमद्भगवद्गीता में धर्म, लोक संग्रह, कौशल (प्रभावकारिता), विविधता (निरंतर रचनात्मकता), जिज्ञासा, सदाचार (नैतिकता), पथप्रदर्शकता और प्रकटीकरण की आवश्यकता (सार्वजनिक छवि) जैसी मौलिक नीतियाँ एवं मानक आदर्श दिये गये हैं जो Corporate Governance के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक माने गए हैं ।

Corporate Governance का दूसरा महत्त्वपूर्ण अंग है शासनकर्त्ताओं की निगम के प्रति सामाजिक जिम्मेदारी और जवाबदेही की स्वीकृति । भगवद्गीता में हितधारकों की भलाई को 'सर्व-लोक-हित' कहा गया है । गीता के इस चिन्तन



Scanned by CamScanner

को अपना कर व्यावसायिक-नैतिकता लागू करने के लिए निगमों को प्रेरित किया जा सकता है जिससे व्यवसाय को दीर्घकालिक लाभ प्राप्त होता है ।

Corporate Governance के अन्तर्गत यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि इन कंपनियों में निवेश किये गये सार्वजनिक धन का दुरुपयोग नहीं किया जाए । सुशासन कपंनियों को न केवल राष्ट्रीय अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रभावी ढंग से प्रतिस्पर्धा करने में मदद करता है । भगवद्गीता के प्रकाश में शासक-दुर्व्यवहार की समस्या का निदान केवल निवेशकों के विश्वास को ही नहीं जीतेगा, बल्कि व्यापार के अच्छे प्रदर्शन भी को सुनिश्चित करेगा, क्योंकि गीता नैतिक और पारदर्शी Corporate Governance के लिए उच्च स्तर का ढांचा प्रदान करती है ।

## 5. श्रीमद्भगवद्गीता में प्रबंधन विचार

दैनिक जीवन में परिवार से शुरू होकर कार्यस्थल, सामाजिक संबंधों या किसी भी अन्य स्थल में, जहां किसी सामान्य उद्देश्य के लिए मनुष्य एक-दूसरे के साथ बातचीत करते हैं सभी में प्रबंधन शामिल होता है । प्रबंधन मानवीय प्रयासों के किसी भी क्षेत्र में सभी गतिविधियों को प्रदर्शन करने का एक व्यवस्थित तरीका है । कर्त्तव्य करते समय अन्य मनुष्यों के साथ वार्तागत सम्बन्ध स्थापित करने के लिए प्रबंधन-प्रथा आवश्यक होती है । प्रबंधन के सिद्धांत विभिन्न पहलुओं जैसे कि समय, संसाधन, कर्मी, सामग्री, मशीनरी, वित्त, नियोजन, प्राथमिकताओं आदि के रूप में सामने आते हैं । प्रबंधन का काम लोगों की कमजोरियों को अप्रासंगिक बनाकर संयुक्त प्रदर्शन करने में सक्षम बनाना है । प्रबंधन के द्वारा लक्ष्य हासिल करने के लिए न्यूनतम उपलब्ध प्रक्रियाओं के साथ



Scanned by CamScanner

अधिकतम उपयोग के माध्यम से भौतिक, तकनीकी या मानव क्षेत्रों में पैदा होने वाली समस्याएँ हल की जाती हैं ।

आधुनिक प्रबंधन प्रथाओं के महत्त्व पर चर्चा करते हुए इस तथ्य से अस्वीकृति नहीं दी जा सकती है कि प्रबन्धन सिद्धांत मानव-जाति जितने ही प्राचीन हैं तथा नए नामों और आधुनिक शब्दावली के तहत इन्हें पुनः परिभाषित किया गया है । पूर्व-ऐतिहासिक काल से वर्तमान रोबोट और कंटयूटर के युग तक उपलब्ध-संसाधनों के प्रबंधन के विचार किसी न किसी रूप में अस्तित्व में रहे हैं ।

भगवद्गीता में तीन मुख्य सिद्धांतों पर बल दिया गया है - मन का प्रबंधन, कर्त्तव्य-प्रबंधन और स्वयं प्रबंधन । इन तीनों का समन्वय ही प्रबन्धन को सशक्त एवं प्रभावशाली बनाता है क्योंकि मनुष्य की आसपास की दुनिया की समझ उसके आत्म-ज्ञान की अनुपाती होती है । आत्म ज्ञान और बाहरी दुनिया में एक स्वाभाविक संबंध स्थापित है । अतः आत्मप्रबन्धन से ही बाह्य प्रबन्धन की सामर्थ्य आती है । हम सभी जानते हैं कि मनुष्य जीवन में प्रबंधन की कमी से अराजकता, अविश्वास, दीर्घसूत्रता, व्यर्थसमय-यापन, संसाधन और ऊर्जा का अपव्यय इत्यादि दोष पैदा होते हैं । परन्तु श्रीमद्भगवद्गीता में हजारों वर्ष पूर्व इन दोषों का निदान प्रस्तुत किया गया है । जिससे अन्तर्द्वन्द्व, तनाव, दक्षता की कमी, न्यूनोत्पादकता, प्रेरणा का अभाव और लचर कार्य-संस्कृति जैसी समस्याओं को दूर करके एक सामंजस्यपूर्ण और सुखमय स्थिति हासिल होती है । भगवद्गीता के ज्ञान द्वारा प्रबंधक को स्वस्थ मनोवृत्ति मिलती है जिससे वह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आतंरिक स्थिरता, मानसिक शांति व धैर्य से कार्य कर पाता है। वह लालच, ईर्ष्या, अहंकार, संदेह और क्रोध से स्वयं को बचाने में समर्थ हो जाता



Scanned by CamScanner

है । भगवद्गीता न केवल आध्यात्मिक ज्ञान के लिए मार्गदर्शन देती है अपितु स्व-प्रबंधन, तनाव और क्रोध प्रबंधन, परिवर्तनकारी नेतृत्व, प्रेरणा, लक्ष्य की स्थापना और प्रबंधन के कई अन्य पहलुओं का भी ज्ञान देती है जिसे मार्गदर्शक के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए ।

आधुनिक प्रबंधन सिद्धांत केवल भौतिकवादी दृष्टिकोण से ही निर्मित हैं जबकि भगवद्गीता में स्वप्रबंधन के महत्त्व पर जोर दिया गया है । गीता के अनुसार सभी मानवीय प्रयासों को सभी प्राणियों के कल्याण की दिशा में होना चाहिए जो केवल निष्काम कर्म से ही सम्भव है । गीता का सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन हमें ऐसे सिद्धान्तों को प्राप्त करवाता है जो वर्तमान युग के प्रबन्धकों और अधिकारियों को विरासत के रूप में समझ कर अपनाने चाहिएं । गीता केवल आध्यात्मिक ग्रंथ नहीं है अपितु जीवन की कला सिखानेवाला व्यावहारिक ग्रंथ भी है । इस पक्ष पर विचार करते हुए निम्न समाधान प्रस्तुत हुए :

**6. गीता का कालातीत ज्ञान :**

श्रीमद्भगवद्गीता को धर्म-निरपेक्ष आचार-संहिता के रूप में सम्मान प्राप्त है । इसका कारण यह है कि इसमें धर्म, जाति, वर्ण, स्थानादि भेदों से ऊपर उठकर समग्र विश्व को एक भाव से प्रकाशित करने का मार्ग दिखाया गया है । श्रद्धा एवं अटूट विश्वास की नींव पर खड़ी गीता की शिक्षाएं कालातीत हैं क्योंकि ये मनुष्य को हर परिस्थिति में विवेक से कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं । इस पक्ष में निम्न बिन्दु उभर कर आए :

**(i) तनाव एवं भय से मुक्ति :** अर्जुन के माध्यम से श्रीकृष्ण मानवमात्र को ऐसा उपदेश देते हैं जो वर्तमान युग में ही नहीं अपितु सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक रूप से मनुष्य के लिए तनाव एवं भय से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त



Scanned by CamScanner

करता है । गीता के द्वितीय अध्याय में प्रतिपादित ज्ञान आत्मा व शरीर के वास्तविक स्वरूप से अवगत कराता हुआ मृत्युभय से मुक्त कर देता है । इन्द्रियों के संयम का मार्ग तनाव से मुक्ति दिलाता है । वैराग्य की भावना से कर्म करते रहना ही सफल जीवन का सूत्र है ।

**(ii) भक्तियोग :** श्रीकृष्ण ने गीता में कर्म एवं ज्ञान के साथ भक्तियोग का विशेष महत्त्व प्रतिपादित किया है क्योंकि भक्ति एवं श्रद्धा के बिना ज्ञान भी प्राप्त नहीं होता । इसीलिए कृष्ण अर्जुन को कहते हैं कि समस्त धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जाओ। वस्तुतः कृष्ण अपने भक्तों का स्वयं ध्यान रखते हैं तथा उन्हें समस्त शोक से पार पहुँचा देते हैं ।

**(iii) लोकसंग्रह :** श्रीकृष्ण का सन्देश है कि मनुष्य को कर्म करते समय वर्तमान एवं भविष्य-सभी कालों का विचार करना चाहिए । हमारी आगामी पीढ़ी हमारा ही अनुकरण करती है अतः हमें अपने व्यवहार से ऐसे आदर्श स्थापित करने चाहिएँ जो युगों तक मनुष्य का हित करते रहें ।

**(iv) नैतिक मूल्य :** सत्त्व, रजस्, तमस् तीन गुणों के माध्यम से गीता मनुष्य को सद्गुणों एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा देती है ।

**(v) ध्यान :** गीता में प्राणायाम के महत्त्व से लेकर भारतीय योग की ध्यान प्रक्रिया का महत्त्व प्रतिपादित है, जिसे आधुनिक युग में तनाव से मुक्ति का उपाय समझा जाता है ।

**(vi) प्रस्थानत्रयी :** भारतीय आध्यात्मिक मेधा को प्रकट करने वाले तीन ग्रन्थ-गीता, ब्रह्मसूत्र एवं उपनिषदों को प्रस्थानत्रयी कहा जाता है। गीता इसका अंग होती हुई भारतीय प्रज्ञा का अद्वितीय दृष्टान्त है ।



Scanned by CamScanner

**(vii) गीता एवं भारतीय दर्शन :** कुछ विद्वानों ने गीता का सांख्य, जैन, बौद्ध, वेदान्त आदि दर्शनों के साथ तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है । गीता वस्तुतः भारतीय औपनिषद दर्शन का सार कही जाती है ।

**(viii) आत्मा का स्वरूप :** गीता में नित्य, अदाह्य, अछेद्य, अक्लेद्य रूप में प्रतिपादित आत्मा नश्वर शरीर से भिन्न कही गई है । बाह्य विषयों से ध्यान हटाकर आत्मा की ओर उन्मुख करना ही मोक्ष का मार्ग है ।

गीता के व्याख्याकारों में महर्षि अरविन्द, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, महर्षि दयानन्द, लोकमान्य तिलक, डॉ॰ राधाकृष्णन, दाराशिकोह, HG Wells, Humbolt आदि विद्वानों का उल्लेख किया गया है ।

श्रीमद्भगवद्गीता पर इतना व्यापक विचार विमर्श उसकी कालातीत मेधा का परिचायक है जो आधुनिक डिजिटल युग में भावनात्मक संकट से बचाने में समर्थ है । इस प्रकार संगोष्ठी में प्रस्तुत वैचारिक आदान-प्रदान से आशा के अनुरूप परिणाम प्राप्त हुए।

संगोष्ठी में निष्कर्षतः यह प्राप्त हुआ कि गीता की व्यावहारिक एवं व्यापक शिक्षाओं को आधुनिक जीवन-शैली में सम्मिलित करने की बहुत अधिक आवश्यकता है । इसके लिए गीता सम्बन्धी बहुविषयक शोध निरन्तर होना चाहिए । भारतीय दर्शन की अमूल्य निधि होते हुए भी प्रबन्धन एवं पर्यटन के क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर इसकी स्वीकृति के लिए और प्रयास अपेक्षित है । कुरुक्षेत्र का गीता के पवित्र स्थल के रूप में विकास इस दिशा में आदर्श दृष्टान्त हो सकता है ।

**प्रोफेसर विभा अग्रवाल**
संस्कृत विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र



Scanned by CamScanner

# International Seminar

On

## EXPLORING SELF IN DIGITAL AGE – THE PERSPECTIVE OF SHRIMAD-BHAGAVAD-GITA PHILOSOPHY

## 25-27 November, 2017

## Report

Shrimadbhagwadgita is the scripture of unparalleled and timeless teachings that weans a man away from conflicts and leads to liberation. Its translation in many international languages and its large number of commentaries strongly speak of its popularity. This scripture is specially venerated in India where many people read it regularly to find answers to their questions about life.

Bhagvadagita has always been associated with Kurukshetra that begins with the verse, **"Dharmshetra Kurukshetra".** The Gita Jayanti at Kurukshetra further strengthens this association in modern times. The International Seminar on Bhavadgita has become an accepted forum for discussions, debates, knowledge sharing, agenda setting for future research on this scripture and its related dimensions. The International Seminar for 2017 is titled as "Exploring Self in Digital Age: A Perspective of Shrimadbhagwadgita Philosophy". The seminar was planned to be multidisciplinary and cross-disciplinary, and research papers were invited for the themes of Relevance of Gita in Modern Inter-connected world; Man-Technology conflict and Gita philosophy; Self Tourism in Sacred Spaces of Gita; Corporate Governance and Gita; Management ideas in Gita and Timeless Wisdom of Gita. More than 125 research papers were presented in Hindi, English and Sanskrit languages from both national and international speakers.

The three-day seminar began on a high note with inauguration by the Hon'ble President of India, Shri Ram Nath Kovind on Nov 25, 2017 and is planned to close on a very high platform of Virat Sant Sammelan on Nov 27, 2017.

The presentations in the seminar included psychological, social, practical, moral and religious perspectives. The outcomes of discussions over three days are summarized as follows.

### 1. BhagvadGita is more relevant in Modern inter-connected world than ever before

In the present digital era and interconnected world, the window to external world is through the screens of phones and computers. People share their thoughts and activities through cyberworld and its sharing platforms such as Facebook, Whatsapp, Instagram, Pinterest, Twitter etc. In this 365x24x7 age of sharing spirituality, humanity, simple living and nurturing relationships take a back seat In such a state of disturbed equilibrium, Bhagvadgita's path of synthesis of action, knowledge and devotion leads to balanced and healthy state of mind. The discussions identified following teachings of Gita as particularly



Scanned by CamScanner

relevant for digitalgeneration.

(i) Yajna: Yajna is said to be the greatest of all actions and rituals prescribed in our cultural texts. Yajna culture is essential for clean environment, feeling of dedication and for healthy life. Material enjoyment with the feeling of sacrifice is the only path that can save the world in modern era of materialism. The philosophy of Yajna in Gita teaches us to stop unlimited exploitation of natural resources and adopt a sustainable approach.

(ii) Balanced Food and Recreation: Controlled and balanced diet along with healthy recreation is the basic principle of the art of living as this helps in building of positive mindset. Balanced sleep and control on all desires also act like a staircase of success which are most important for our young generation.

(iii) Sense of Duty: Gita gives a sense of what is good and what is bad for mankind and it makes a man capable to take right decision at right time and act accordingly. To die for duty is the most important teaching of Gita that can help in building duty oriented society.

(iv) Equilibrium of Mind: To maintain equilibrium of Mind in challenging situations is called Yoga. Man can transcend all difficulties if he becomes strong to view the duos like happiness and sorrow, loss and profit, success and failure, win and defeat with equality.

## 2. The Philosophy of Shrimad-Bhagwad-Gita can help in resolving Man-Technology Conflict in Digital Age

In the present times technology driven digitized world has revolutionized almost every aspect of human life. In today's materialistic world it has become a human nature to acquire wealth and fame and this lust is never ending, rather it grows stronger day by day. Quite often we lose ethics in the means to acquire materialistic gains. In rat race to accumulate wealth, we lose sight of purpose of human life. The material progress in the technology driven life has outdone the traditional way of life, paving way for the rise of state of confusion, thus leaving mankind in the state of dilemma.

The traditional social and moral system is experiencing degeneration and fragmentation of social institutions. This has changed the human to human relationship and affected the family system. In broader perspective, the social fabric in totality has been affected by the growing dependence of modern humans on the technology. This dependence has reached the level of lustful addiction that has distanced one from others and one's "own self" and this gap is exponentially increasing with every passing day. The lack of interaction within the family has resulted in discontentment, individualism, anxiety, depression and crime. The problem of being lonely despite of plentiful of material things and resources is pulling the man towards numerous disorders.

The need of time is to shift from material life to a holistic living. The journey of self is altogether different from existing material way of life and it establishes an individual's dialogue with self. During the dialogue between Lord Sri Krishna and Arjuna, a number of questions are raised such as about the utility and futility of man's actions, the 'ultimate' of this fast-moving life, the rationale of pains and pleasures of



Scanned by CamScanner

this life and other alike mundane concerns.

It is in this background that one can anticipate the significance of the philosophy of Gita which draws a balance between our material and non-material needs. It offers a broader framework to see and live the life. This framework explains the theory of Karma and Bhakti which are essential ingredients of enlightened life. Without understanding this framework, the existential crisis of humans cannot be addressed.

### 3. Sacred Spaces of Gita and its narratives provide opportunity for self tourism

India has a unique place in the world for spiritual tourism. All its attractions and destinations; mountains, rivers, forests, sea-beaches are known for natural beauty and spiritual & historical value. The multiple attractions at one destination create a setting or tourscape for tour experiences. Sacred spaces require different settings for self exploration. The sacred spaces of Kurukshetra have gained importance for being a holy city and the birth place of world's greatest scripture – Gita. The annual Gita Jayanti celebrations exhibit the relevance of teachings of Gita than the material richness or physical development of tourist sites. In this context, the key questions are whether tourism is an activity for those who wish to search Self; or whether Kurukshetra is a perfect destination for this class of tourists? Scholars in their deliberations believed that tangibilazation of intangible heritage of Gita makes it easier for a common man to connect to self. The following activities were specially acknowledged as building blocks for creation and management of sacred paces.

(i) Gita Marathon: Physical fitness is the basis of religious performances, a Marathon during the festival can make one feel rejuvenated, refreshed and receptive.

(ii) Gita Arti and Bhajan Sandhya: Bhajan Sandhya at Brahm Sarovar creates a spiritual ambience. Gita Arti sung by People with a promise to spread universal brotherhood.

(iii) Gita Chant: Gita shloka chant is a symbol of world peace. . A Global Gita Chant makes people aware of the power of the divine language Sanskrit and the message of Gita.

(iv) International seminar and *Santa-Samagama*: This academic activity spreads the wisdom of Gita among the learned class and encourages discussions and sets directions for future research.

(v) Light and Sound Show: The Light and Sound Show at Jyotisar depicts the story of Mahabharata which is a point of attraction for the tourists and mesmerizes audience through its interesting narrative.

### 4. The philosophy of Shrimad-Bhagwad-Gita is reflected in modern principles of corpprate governance

Corporate governance; the rules, practices and guiding principles followed by business for efficient use of resources and to align the interests of individuals, corporations and society focus on ethics and social responsibility.



Scanned by CamScanner

In broader sense, Corporate Governance involves open and honest operations of companies which enhances the value of the company by making it accountable and transparent. It is commitment to values, ethical business conducts and is normative framework to exercise power. Shrimad- Bhagwad- Gita have given the core values and guiding principles of Dharma (righteousness), Loka Sangraha (transparency), Kausalam (efficacy), Vividhta (constant creativity), Jigyasa (learning), Sadachar ( ethical), Pathpardarshak (regulatory framework) and Disclosure Requirement ( public image) which all help to achieve the objectives of corporate gove.nance.

Another aspect of corporate governance is karma which is the social responsibility of corporate leaders towards corporation and acceptance of their accountability. "Well-being of stakeholders" is referred as "Sarva Loka Hitam" in Gita. Karma is expected to motivate the corporations to implement business ethics. Good karma will yield long term benefit in future for the business. It paves the way to 'reward' and 'punishment'. Dharma and karma are vital components of Gita.

The issue of Corporate Governance is main point of corporate culture, strategy and operations so as to ensure that the public money which has been invested in these companies is not misused. Shrimad-Bhagwad-Gita is one of the most sacred texts which provide timeless wisdom applicable to all the aspects of human life. Gita offers a framework for stimulating high level of motivation for ethical and transparent corporate governance. Good governance helps the companies to effectively compete at national as well as international levels. Redressing the problem of corporate misconduct in the light of Bhagwad-Gita will not only win the confidence of investors but will also ensure business sound performance.

## 5. Shrimad-Bhagwad-Gita philosophy and modern management

Management is involved in everyday life starting from family, workplace, social relations or any other environment where a group of human beings interact for a common purpose. Management practices are essential to keep oneself engaged in interactive relationship with other human beings while performing one's own duty. Management principles come into play through their various facets like management of time, resources, personnel, materials, machinery, finance, planning, priorities etc. Its task is to make people capable of joint performance by making their weaknesses irrelevant. It resolves situations of scarcities which arise in the physical, technical or human fields through maximum utilization with the minimum available processes to achieve the goal.

While discussing the importance of modern management practices, one cannot deny the fact that these principles are as old as the mankind itself and they have been redefined under new names and modern vocabulary. From the pre-historic days of aborigines to the present day of robots and computers the ideas of managing available resources have been in existence in some form or other.

The philosophy of Shrimad-Bhagwad-Gita guides us to adopt certain principles to make our life stable and harmonious. ***The three principles which have been emphasized by the Bhagwad-Gita are the management of mind, management of duty and the principles of self management. The principles propounded therein, seem to have universal application and useful for managers to mould their***



Scanned by CamScanner

***character and strengthen themselves to develop their managerial effectiveness. Man's understanding of the world around him is proportional to the understanding of the self. There exists a correlation between the self-knowledge and the outer world.***

***We all know that lack of management in one's life causes chaos, misunderstanding, delay and wastage of time, resources and energy.*** In this context the Bhagwad-Gita expounded thousands of years ago enlightens us on all managerial techniques leading to a harmonious and blissful state of affairs as against conflicts, tensions, low efficiency and less productivity, absence of motivation and lack of work culture etc. Bhagwad-Gita advocates that in order to gain sound mental health, a manager should try to possess and maintain internal constancy, mental peace and a calm mindset even in adverse situations and should try to avoid greed, envy, ego, suspicion and anger.

Bhagwad-Gita has got all the management tactics which can be to achieve the mental equilibrium and to overcome any crisis situation. It not only guides us to spiritual enlightenment but also proposes the art of self management, conflict management, stress & anger management, transformational leadership, motivation, goal setting and many others aspects of management which can be used as a guide to increase our managerial effectiveness.

Modern management theories and thoughts deal with materialistic approaches for managing the organizations, while the Bhagwad-Gita emphasizes the importance of managing oneself. Bhagwad Gita stresses directing all human efforts towards 'welfare of all beings." Lord Krishna transformed the mind of Arjuna from the state of dilemma to one of the righteous action. He advised that his actions should not be for his own benefit but for the welfare or goodness of many. A vigilant study of Bhagwad-Gita leads to important principles and lessons which must be inherited by managers and executives of present era to perform their duties in an effective and efficient manner. Bhagvadgita can also be useful in developing an Indian style of management.

**6. Wisdom of Gita is timeless**

Gita can be regarded as a secular code of conduct in the world because it transcends the differences of religion, caste, colour and place etc. and treats all human beings as one. Its teachings are timeless being based on strong foundations of faith and devotion. These teachings inspire us to think, to understand and to decide for the betterment of the mankind. The followingteachings of Gita are particularly relevant in today's life.

(i) Stress release and redemption from fear: Teachings of Lord Krishna are regarded as an all time remedy for stress release and coping with fear of death. Through the knowledge of eternal soul, the immortal body and their relationship one is able to gradually overcome the fear of death. Meditation and contemplation are the causes of stress release known all over the world.

(ii) Bhaktiyoga: Lord Krishna has many times stated in Gita that devotion towards God is the



Scanned by CamScanner

best sentiment and God Himself takes care of His devotees. Along with sensitizing about duty, Lord Krishna asks Arjuna to leave aside all dilemma and fears and come to His shelter.

(iii) Role Model: Another great message of Gita is being a role model for your juniors. While making policies and while doing actions we must take care that the next generation is going to follow us. Hence we should act with foresightedness, become a role-model by establishing such ideals and norms which may sustain forever.

(iv) Moral values: The three basic components of nature, i.e. Sattva, Rajas and Tamas rule all our thoughts and behavior. We must make efforts to raise sattva in order to attain high moral values.

(v) Meditation: Gita teaches us asana, Pranayama and Samadhi which are necessary for physical and mental fitness.

(vi) Indian Philosophy and Gita : Gita is counted among the three texts of Vedanta philosophy which reveal the Indian Philosophical and spiritual wisdom, the Brahmasutras, the Upanishads and the Gita jointly known as *Prasthanatrayi*. Some scholars have made comparative studies for the sake of better clarity to understand Gita by comparing with Samkhya, Bauddha, Jaina etc.

(vii) Soul Theory: Gita describes the nature of soul as permanent, existing within all living beings, never born, never dies and changeless. It is indestructible, cannot be cut by weapons, burnt by fire and so on. This Indian Soul Theory is the backbone of our spiritual structure. Complete focus drawn on Soul leads to emancipation.

The seminar summed up with the sense that the invaluable SrimadBhagvadgita needs greater integration in modern lifestyle through comprehensible and practical lessons of life, possible only through continuous and cross-disciplinary research on Gita. While the philosophy of Gita has an important place in Indian philosophy, it is yet to create a globally accepted position in modern disciplines such as management and tourism. Development of Kurukshhetra as the 'sacred spaces of Gita' based on philosophy of Gita can act as a role model in this direction.

Manjula

**Prof. Majula Chaudhary**
Deptt. of Tourism & Hotel Management
Kurukshetra University, Kurukshetra



Scanned by CamScanner

# KURUKSHETRA UNIVERSITY KURUKSHETRA

(Established by the State Legislature Act XII of 1956)
**(Accredited "A+ Grade" by N.A.A.C)**

## International Seminar

On

## EXPLORING SELF IN DIGITAL AGE – THE PERSPECTIVE OF SHRIMAD-BHAGAVAD-GITA PHILOSOPHY

## Speakers for Technical sessions

| **Day 1 (25TH NOV 2017)** | | **To be conducted by Deaprtment of Philosophy** |
|---|---|---|
| **Session I** | 02:30 PM to 04:00 PM | i. Sh. Gyananand Ji Maharaj<br>ii. Prof James Hegarty, UK<br>iii. Nawadulfateh Shahid, Gandhi Dham, Gujrat<br>iv. Sh. Ashutosh Bhardwaj, Kurukshetra<br>v. Mr. Stephan Knapp, USA<br>vi. Sh. Ajay Narula, Japan |
| **Session II** | 04:15 PM to 06:00 PM | i. Prof. Sohan Pal Arya, Haridwar<br>ii. Prof. Vaidya Nath Labh, Jammu<br>iii. Dr. K.D. Jha, Principal DAV College Pehowa<br>iv. Prof. Someshar Dutt, Director, Sanskrit Academy, Panchkula<br>v. Dr. Naresh Bhargav, BPS Mahila Vishav Vidhyalya, Sonipat<br>vi. (Brahamkumari) B.K.Pushpa |
| **Day 2 (26TH NOV 2017)** | | **To be conducted by Department of Tourism** |
| **Session III** | 10:00 AM to 11:30 AM | i. Pt. Satish Sharma, Jaipur<br>ii. Mr. S.P. Sharma, (Retd. IAS) Gurgaon<br>iii. Ms. Mahaliyo Nazarova, Kirgistan |
| **Session IV** | 11:45 AM to 01:30 PM | i. Swami Rajeshwarnand Ji<br>ii. Prof Vinay Chauhan, Jammu University, Jammu<br>iii. Prof. Ashish Dahiya, MD University, Rohtak<br>**iv.** Dr. Parshant Gautam, Punjab University, Chandigarh |



Scanned by CamScanner

| | | |
|---|---|---|
| **Day 2 (26TH NOV 2017)** | | **To be conducted by Department of Management** |
| **Session V** | 02:30 pm to 04:00 pm | i. Prof. Pawan Kumar Singh, IIM Indore<br>ii. Prof. P. N. Mishra, DAVV Indore<br>iii. Prof. Subbhash B., Goa University, Goa<br>iv. Sh. Satish Kumar, Jagran Manch, Delhi<br>v. Sh. Ajay Chhabra, Chief Digital Officer, Brand Growth Ventures, New Delhi |
| **Session VI** | 04:15 PM to 06:00 PM | i. Prof. (Retired) R.S. Dwivedi, University School of Management, Allahabad<br>ii. Prof. (Retired) A.S. Chaudhary, University School of Management, Kurukshetra<br>iii. Prof. (Retired) R.K. Jain, University School of Management, Kurukshetra<br>iv. Dr. Krishan K. Pandey, Jindal Global University, Sonipat |
| **Day 3 (27TH NOV 2017)** | | **To be conducted by Department of Sanskrit** |
| **Session VII** | 10:00 am to 11:30 am | i. HH Swami Padnabhanandji, Divine Life Society Rishikesh<br>ii. Mr. Oleg G, Russia<br>iii. Prof. Man Singh, Roorkee<br>iv. Mr. David Frawley, USA<br>v. Prof. J.P. Samwal, Panchkula |
| **Session VIII** | 11:45 am to 01:30 pm | i. Prof. Vikramjit Singh, Former DGP (UP), Pro Chancellor Noida International University<br>ii. Prof. Surrender Kumar, MDU, Rohtak<br>iii. Prof. Inder Mohan Singh, PU, Patiala<br>iv. Dr. Hari Parkash, Principal IGN College, Ladwa<br>v. Dr. C.P. Sharma, Gaziabad<br>vi. Dr. V.K. Shukla, Saharanpur |
| **Session IX** | 02:30 pm to 04:00 pm | Paper Presentations only |



Scanned by CamScanner

# KURUKSHETRA UNIVERSITY KURUKSHETRA

(Established by the State Legislature Act XII of 1956)
**(Accredited "A+ Grade" by N.A.A.C)**

## International Seminar

On

## EXPLORING SELF IN DIGITAL AGE – THE PERSPECTIVE OF SHRIMAD-BHAGAVAD-GITA PHILOSOPHY

## LIST OF PAPER PRESENTERS

| Ref no. | Topic | Paper presenters | Name of Organization |
|---|---|---|---|
| 1. | श्रीमद्भगवद गीता में योग : एक विश्लेषणात्मक दृष्टि | Dr. kamlesh | सहायक प्रोफेसर, संस्कृतए एजीवन चानन महिला महाविद्यालय, असन्ध (करनाल) |
| 2. | The Eternal Teachings Of Bhagavad-Gita | Mr. Aditya | Panjab University, Amritsar |
| 3. | Modern Science and Bhagwad -Gita with special reference to Swami Vivekananda- A Review | Affiefa Liyaqat[1]<br>Vivek Gulati[2] | Department of Philosophy Govt Degree College Bishnah Jammu<br>Research Scholar Department of Philosophy Kurukshetra University Kurukshetra |
| 4. | Understanding and Exploring 'Self' by Undertaking Travel in India | Dr Charu Sheela Yadav<br>Dr Pawan Gupta | Indian Institute of Tourism & Travel Management, NOIDA |
| 5. | Tourism Product Designing Beyond the World of Digital Era | Dr Pawan Gupta<br>Dr Charu Sheela Yadav | Indian Institute of Tourism & Travel Management, NOIDA |





Scanned by CamScanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| 6. | Exploring Self-Knowledge from Bhagavad-Gita: It's Significance for Human Capital Development | *Dr. Rajesh Kumar<br>**Dr. Surender Singh | * Asstt. Professor (Computer Science) S.U.S. Govt. College Matak Majri Indri (Karnal)<br>* Asstt. Professor (Phylosophy) S.U.S. Govt. College Matak Majri Indri (Karnal) |
| 7. | Exploration Of Motivation And Perception Of Visitors To Religious Event: The Case Of Gita Jayanti Festival, Kurukshetra | Dr. Dinesh Dhankhar<br>Dr. Lakhvinder Singh | Assistant Professor,Department of Tourism & Hotel Management,K.U. Kurukshetra &<br>Assistant Professor, Department of Tourism Management,<br>Pt. C.L.S. Govt. P.G. College, Karnal |
| 8. | Impact of International Gita Jayanti Mahotsav on Growth of Tourism in Kurukshetra | *Mr. Sandeep Dhankar<br>**Dr. Mahesh Kumar | Assistant Professor's, Department of Tourism & Hotel Management, Kurukshetra University, Kurukshetra. |
| 9. | Management Teachings Of 'Bhagwad-Gita' As A Torch Bearer For Present Day Managers | Dr. Mahesh Kumar | Assistant Professor, Department of Tourism & Hotel Management, Kurukshetra University, Kurukshetra. |
| 10. | Spiritual intelligence in context of Bhagavad-Gita for resolution of conflict of choices | Dr. Parveen Kumari | Librarian, P.K.R Jain Vatika, Sr. Sec. School, Ambala |
| 11. | Management Thoughts And Srimad Bhagvad Gita | Dr. Pooja Malhotra<br>Ms. Vandana Sabharwal | Assistant Professor's, Department of Commerce, Dyal Singh College, Karnal. |
| 12. | Bhagavad Gita as a tool for man-technology conflict resolution in modern digital era | Dr. Punam Kundu1,<br>Dr. Dinesh Dhankhar2 | 1Assistant Professor in Economics, KVA DAV College for Women, Karnal<br>Assistant Professor, Department of Tourism & Hotel Management, K.U. Kurukshetra |
| 13. | Left | | |
| 14. | Relevance of Bhagavad Gita in Modern Times | Dr. Rakesh Mittal | Asstt. Prof. of History , R.K.S.D ( P.G ) College, Kaithal |



| | | | |
|---|---|---|---|
| 15. | Religious Tourism in 'Krishna Circuit': Contemporary Issues and Prospects | Dr. Reeti Gupta | Assistant Professor of Commere, Government College Israna, Panipat, Haryana |
| 16. | Bhagavad Gita: An Ultimate Tool Of Stress Management | Dr. Sonia Malik | Associate Professor, Department of Physical Education, Arya Girls College , Shahabad (M), Kurukshetra, Haryana. |
| 17. | Management Ideas in Srimad Bhagwad Gita | Dr. Vandana Goyal A | ( H.O.D) A.V College of Education<br>Franchise of Dr. C.V Raman University (Bhopal) |
| 18. | Timeless Wisdom Of Srimad-Bhagwad-Gita | Dr.B.K.Basavaraj Rajrushi | Director Of Instructions ,<br>Values, Spirituality and Yoga Education cum Training Centre for State School Teachers<br>Women's College Hubballi- 580020 |
| 19. | Reflection of Bhagavad Gita in Stress Management of Students | Dr.Ritu Mehla<br>Dr. Ravinder Mehla | Lecturer English , Doon Valley College of Education(Haryana) Karnal<br>Advocate, District Court, Kurukshetra(Haryana) |
| 20. | Contrasting Mahabharata, Bhagavad Gita And The Concepts Of Strategic Management | Dr. Karnika Gupta<br>Rajesh Gupta | Assistant Professor, Department of Commerce Kurukshetra University<br>Assistant Professor, Department of Applied Sciences Shivalik Institute of Engineering and Technology |
| 21. | Implications Of Mckinsey's 7s Model In Modern Management And Lesson From Srimada Bhagavada Gita | Lucky Verma | Research Scholar,Department of Commerce |
| 22. | Shrimad Bhagwat Gita: A Discourse to understand the process of realising super consciousness with Spiritual Communication | Madhu Deep Singh,<br>Ph.D. Media Studies | Assistant Professor, IMC&MT<br>Kurukshetra University, Kurukshetra, India |
| 23. | Re-visiting the attractiveness of Bhagavad–Gita and its symbols among tourists visiting Kurukshetra | Prof. Manjula Chaudhary<br>Pooja Borwal | Professor, Department of Tourism and Hotel Management<br>Kurukshetra University, Haryana, |



Scanned by CamScanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | Research Scholar, Department of Tourism and Hotel Management<br>Kurukshetra University, Haryana, |
| 24. | Stress Management and Bhagavada Gita | Meenakshi Ahlawat<br>Kirti Gautam | Ph.D Research Scholar<br>Department of Commerce, Kurukshetra University<br>Kurukshetra<br><br>Ph.D Research Scholar<br>Department of Commerce, Kurukshetra University<br>Kurukshetra |
| 25. | Understanding Indigenous Human Resources Management in India: Srimad Bhagavad-Gita Perspective | Dr. Mohinder Chand<br>Dr. Luxmi<br>Shiwali | Professor, Department of Tourism and Hotel Mgt., Kurukshetra University, Kurukshetra, (HR) India<br>Associate Professor , University Business School , Panjab University, Chandigarh<br>Asstt. Prof. Economics Govt College Bherion(Pehowa). |
| 26. | Lesson from Bhagvad Gita- Mind Management | Namita* and Prof. Narendra Singh** | *Assistant Professor, Government College for Women, Gohana, Haryana<br>**Professor, Department of Commerce, Kurukshetra University Kurukshetra, Haryana |
| 27. | Artifacts of Bhagavad Gita and Vedic culture on the territory of Central Asia | Nazarova Makhlie Abdurahmanova Hulkarai | Faculty of World Languages and Cultures,<br>Osh State University |
| 28. | Resemblance of lifestyle: A Window to the colorful Jhunjhunu Frescoes on Krishna in Mahabharata | Dr. Nirupama Singh | Assistant Professor, Department of Visual Arts (Painting) , The IIS University, Jaipur |
| 29. | Quest for the Self in XXICentury | Oleg Gorshevskii | Professional translator/interpreter (English, Greek), Defence Language Institute, Moscow, Russia, 1985<br>4/50/26, VOLZHSKIY BOULEVARD,<br>MOSCOW, RUSSIA, 109263 |
| 30. | Corporate Governance: Dharma and | Pooja | Ph.D Research scholar, Department of Commerce |



| | | | |
|---|---|---|---|
| | karma of the corporations | Poonam | Kurukshetra University, Kurukshetra<br><br>M.Phil. Research scholar, Department of Commerce<br>Kurukshertra University, Kurukshetra |
| 31. | Improving Managerial Effectiveness In The Corporate World-The Perspective Of Bhagavad Gita's Philosophy | R.S DWIVEDI<br>And<br>AkshitaDwivedi* | *R.S Dwivedi is a retired professor of management, Kurukshetra University, Kurukshetra<br><br>AkshitaDwivedi, Research scholar in management (registration-process for Ph.D. to be completed)<br>Allahabad University, Allahabad. |
| 32. | The Teachings and Lessons of Bhagavad Gita and its Relevance to the Modern Management | Richa Langyan | Assistant Professor of English, R.K.S.D (P.G) College, Kaithal. |
| 33. | Drawing Analogy Between Modern Management Concepts And Teachings Of The Bhagavad Gita: A Theoretical Analysis | Rituraj Saroha*<br>Saloni Pawan Diwan | Research Scholar,University School of Management<br>Kurukshetra University, Kurukshetra – 136119<br>Assistant Professor,University School of Management<br>Kurukshetra University, Kurukshetra – 136119 |
| 34. | Exploring 'Self' In The Digital Age: The Gita Perspective on Material Vacuum | S.S. Boora, Professor<br><br>Amita | Department of Tourism & Hotel Management,Kurukshetra University, Kurukshetra<br><br>Associate Professor in Economics,CIS Kanya Mahavidyalaya, Fatehpur Pundri (Kaithal) |
| 35. | Self-Discovering in Digital Age thru Gita<br>Karma-Dharma | MS. Satya Kalra | Founder and President of Path to Anandam<br>Danville, CA. 94506 |
| 36. | Bhagavad-Gita's Ultimate Purpose | Stephen Knapp<br>(Sri Nandanandana dasa) | President of the Vedic Friends Association<br>Chairman of the Board of the Detroit, Michigan, USA, Iskcon Temple<br>249 Piper Blvd., Detroit, Michigan, 48215 USA |



Scanned by CamScanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| 37. | Role of Srimad-Bhagavad-Gita in Corporate Governance | SUMAN LATA | Assistant Professor of commerce,Rajiv Gandhi Govt. College, Saha,Distt. Ambala (Haryana) |
| 38. | Role of Srimad-Bhagavad-Gita in Corporate Governance | Suman Lata and Prof. Nirmala Chaudhary | Assistant Professor in commerce, Rajiv Gandhi Government College Saha<br>University School of Management, KUK, |
| 39. | Impact of Social Media in Spreading Message of Bhagavada-Gita | Vikas Kumar | Research Scholar, Department Of Commerce<br>Kurukshetra University Kurukshetra |
| 40. | Self and Society:<br>A Study of Shrimad Bhagwad Gita | Virender pal | Department of English<br>University College Kurukshetra |
| 41. | गीता एवं जैन–दर्शन में जीव–तत्त्व | डॉ0 अनुभा जैन | गुरु नानक गर्ल्ज़ कॉलेजए यमुनानगर (हरियाणा) |
| 42. | गीता में नेतृत्व संचार की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता | डा0 बन्सी लाल | सहायक प्रोफेसर जनसंचार एवं प्रोधौगिकी संस्थान कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र। |
| 43. | प्रबन्धन कौशलता की कुंजी:श्रीमद्भगवद्गीता | डा.(श्रीमती) नीरज शर्मा, | अध्यक्षा, संस्कृत विभाग , कन्या महाविद्यालय, जालंधर( पंजाब) |
| 44. | श्रीमद्भगवद्गीता में कर्त्तव्यबोध का संदेश | डॉ. जितेन्द्र आचार्य | असिस्टैट प्रोफेसर, संस्कृत D.D.O., K.U.K. |
| 45. | आधुनिक तकनीकी युग में गीता के सन्दर्भ में आत्मान्वेषण | डॉ0 कविता यादव<br>सहायक आचार्या | के0 वि0 ए0 डी0 ए0 वी0 महिला महाविद्यालय करनाल |
| 46. | श्रीमद्भगवद्गीता में स्थितप्रज्ञ–दर्शन | डा0 ललिता जुनेजा | फरीदाबाद हरियाणा |
| 47. | श्रीमद्भगवद् गीता में संन्यास कर्म का वास्तविक स्वरूप | महावीर सिंह | ऍम फिल संस्कृत एव प्राच्य विद्या संस्थान<br>कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय |
| 48. | Bhagwad-Gita In Modern Interconnected World | मनु आर्या | संस्कृत विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र |



| | | | |
|---|---|---|---|
| 49. | कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण का उपदेश - श्रीमदभगवदगीता के कर्मयोग द्वारा स्वयं प्रयत्न करके आधुनिक युग में मानव कल्याण | एम एस श्योकन्द | |
| 50. | उत्तर–आधुनिक युग में गीता ज्ञान का महत्व | प्रदीप कुमार | रिसर्च स्कॉलर |
| 51. | श्रीमद्भगवद्गीता में सुख-दुःख विवेचन | पूजा | ऍम फिल ,संस्कृत एव प्राच्य विद्या संस्थान<br>कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय |
| 52. | Management Ideas In Srimad Bhagwad Gita | ब्रह्मकुमार डॉ आर. डी. शर्मा, | 1676/8, विष्णु कालोनी, कुरुक्षेत्र |
| 53. | गीता में ज्ञानयोग की अवधारणा | रजनी रानी | ऍम फिल संस्कृत<br>संस्कृत एव प्राच्य विद्या संस्थान<br>कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय |
| 54. | योग और योगभ्रष्ट का विवेचन (श्रीमद्भगवद्गीता के संदर्भ में) | रीता देवी | साहचर्य संस्कृत राज्कयिया स्नातकोतर महाविद्यहालय<br>अम्बाला |
| 55. | गीता एवं बौद्ध-दर्शन में आत्मा का स्वरूप : एक अनुशीलन | डॉ॰ रीजा | Asstt. Prof.<br>संस्कृत एव प्राच्य विद्या संस्थान<br>कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय |
| 56. | गीता के सन्दर्भ में परमात्मा की प्राप्ति के साधन | रूचि शर्मा | Asstt. Prof.<br>संस्कृत एव प्राच्य विद्या संस्थान<br>कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय |
| 57. | गीता की वर्तमान जीवन में महत्ता | सुदेश रानी | कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय |
| 58. | श्रीगीता में आत्मसाक्षात्कार के सोपान | डॉ सुमन शर्मा | देल्ही विश्वविद्यालय, देल्ही |
| 59. | गीतामेंनिहितसामाजिक यथार्थ एवंमानवमूल्य | डॉ. सुरेखा | सहायकप्रोफेसर, हिन्दी<br>जीवनचाननमहिलामहाविद्यालय, |



Scanned by CamScanner

| | | | असंध (करनाल) |
|---|---|---|---|
| 60. | "धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय"। | डॉ विदुषी शर्मा | |
| 61. | श्रीमद्भागवद्गीता में स्व सामञ्जस्य से विश्व सामञ्जस्य के सूत्र | डॉ. (श्रीमती) विनय सिंहल | असिस्टेंट प्रोफेसर<br>आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल |
| 62. | | योगिता | संस्कृत एव प्राच्य विद्या संस्थान<br>कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय |
| 63. | गीतायाः कर्मफलसिद्धान्तः | डॉ गौरव शर्मा | सहायक प्रोफेसर,संस्कृत विभाग<br>जी एस आयुर्वैदिक मेडिकल कालेज,<br>जिला–हापुड़, उत्तर–प्रदेश |
| 64. | श्रीमद्भगवद्गीतायांवेदप्रतिपादितयज्ञविद्यायाः दियातिलसन्दर्भेप्रासंगिकत्वान्वेषणम् | डॉ0 ललितकुमारगौडः | आचार्योऽध्यक्षश्च,<br>संस्कृतविभागः, कु0 वि0 कुरुक्षेत्रम् |
| 65. | श्रीमद्भगवद्गीतायाः कर्मयोगस्य महत्त्वम् | डा0 विशम्बरदासः | सहायकः प्रोफेसरः<br>संस्कृत, प्राच्यविद्यासंस्थानम्<br>कु0 वि0, कुरुक्षेत्रम् । |
| 66. | Psychotherapy- Insight From Bhagwat Gita | Rajesh Kumar ( M.A) | Department of Psychology<br>CDLU (SIrsa) |
| 67. | Corporate Governance: A New Sloka of the Old Mantra | Ms. Jyoti Mor,<br>Dr. Seema Malik | Research Scholar<br>Assistant Professor,<br>Department of Commerce, BPSMV, Khanpur Kalan |
| 68. | Leadership Lesson from Srimad-BhagwadGita: A Periscopic View | CharuManocha*<br>Rajesh Kumar* | Research Scholar, University School of Management, Kurukshetra University Kurukshetra<br>Haryana |



| | | | |
|---|---|---|---|
| 69. | Relevance of Bhagwad Geeta to Management thoughts and Principles | Priya<br>Anshu | Research Associate ,Bhagat Phool Singh Mahila Vishwavidyalaya, Khanpur Kalan, Sonepat<br>Research Scholar,Bhagat Phool Singh Mahila Vishwavidyalaya, Khanpur Kalan, Sonepat |
| 70 | Bhagwad-Gita: Relation With Modern Age And Mathematics | Gunjan Sharma<br>Dr.Sonika Kumari | Student ,SKIET,Kurukshetra University Kurukshetra , Faculty TGT MATHS SKV, TIKARI KALAN, Delhi |
| 71 | Bhagwad Gita and Present Day Education | Dharmender | Research Scholar,kurukshetra University, kurukshetra. |
| 72 | Electronic Library Of Cultural Heritage : Copyright Limitations And Exceptions On Open Access | Prof.(Dr.) Naresh Kumar Vats | Head-Center for IPR & Chairman-Center for Postgraduate Legal Studies<br>Maharashtra National Law University, Nagpur<br>Mob. 7086336601 |
| 73 | Srimad Bhagavad Gita: Idea's Bank for Potential Managers | Vipin Singh<br>Amrik Singh<br>Rajnikant Sen | Lecturer,School of Hotel Management & Tourism, Lovely Professional university, Jalandhar –Delhi GT Road, Phagwara (Punjab).<br><br>Assistant Professor, School of Hotel Management & Tourism, Lovely Professional university,Jalandhar – Delhi GT Road, Phagwara (Punjab).<br>Final Year (MSc.) ,School of Hotel Management & Tourism, Lovely Professional university,Jalandhar – Delhi GT Road, Phagwara (Punjab). |
| 74 | Bhagwad- Gita in Modern Interconnected World | Dr. Wazir Singh* | Assistant Professor<br>Panchyati Raj in Haryana Institute of Rural Development,<br>Nilokheri.Karnal |



Scanned by CamScanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| 75. | I lost myself in digital world; I explored myself through Bhagwad-Gita | Ekta | Research Scholar,<br>Department of Philosophy, Kurukshetra University, Kurukshetra |
| 76. | Mind Management: Lessons from Bhagvad Gita | Rani Devi<br>Neelam Kumari | Research Scholar, Dept. of Education, M.D.University, Rohtak<br>Research Scholar, Dept.of political Science, M.D.U.Rohtak |
| 77. | Changing Dimensions of Dharma in the Digital Age | Dr. Neeraj Batish | Assistant Professor<br>Political Science<br>Institute of Law<br>Kurukshetra University<br>Kurukshetra |
| 78. | Combating Stress through the Bhagavad Gita | Sucheta Boora<br>Dr Dalbir Singh | Research Scholar, Haryana School of Business, Guru Jambheshwar University of Science & Technology, Hisar-125001.<br>Assistant Professor, Haryana School of Business, Guru Jambheshwar University of Science & Technology, Hisar-125001. |
| 79. | Bhagavad Gita and Self Knowledge-A Review | Seema Rani | Research Scholar,<br>Department of Philosophy,<br>K.U. Kurukshetra |
| 80. | Srimad Bhagavad Gita: An Inspirational Guide for Present Scenario | Dr. Ishani Patharia<br>**Pankaj Misra<br>***Anjana Pandey | Assistant Professor, Department of Commerce, Bhagat Phool Singh Mahila Vishwavidyalaya, Khanpur Kalan Sonepat.<br>Assistant Professor, Department of Hotel Management, Bhagat Phool Singh Mahila Vishwavidyalaya, Khanpur |



| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | Kalan Sonepat.<br><br>Research Scholar, Department of Commerce, Bhagat Phool Singh Mahila Vishwavidyalaya, Khanpur Kalan Sonepat. |
| 81. | Mahatma Gandhi as an Ambassador of Bhagvad Gita in Modern Times | Dr. Sulochana Nain | Assistant Professor<br>History<br>DAV (PG) College<br>Karnal |
| 82. | The Marvel of the Bhagavad Gita – It's Just the Beginning of Life Lessons" | Monika | (B.E., M.Tech.) |
| 83. | श्रीमद्भगवद्गीता में प्रबन्धन | Dr. Ashutosh | Department of Sanskrit<br>Sanatan Dharm Rajkaya vidhyalaya<br>Bayavar |
| 84 | गीता एवं बौद्ध-दर्शन में आत्मा का स्वरूप : एक अनुशीलन | डॉ० रीजा | संस्कृत एव प्राच्य विद्या संस्थान<br>कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय |
| 85 | श्रीमद्भगवद्गीता में प्रबन्धन | मुनेश देवी | संस्कृत विभाग<br>महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय |
| 86 | गीता में जीवन प्रबन्धन | सुकीर्ति | आर्य हिन्दी संस्कृत महाविद्यालय<br>चरखी दादरी (भिवानी) |
| 87 | गीता का शाश्वत ज्ञान | सुरुचि | पीएच०डी० शोधार्थी<br>संस्कृत विभाग<br>महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालयए रोहतक |



Scanned by CamScanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| 88 | समय बन्धन से परे गीता | रितु | संस्कृत एव प्राच्य विद्या संस्थान<br>कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय |
| 89 | श्रीमद भगवदगीता की सार्थकता : वर्तमान संधर्ब मे | डॉ यशोदा | सेक्टर - ३ , रोहतक |
| 90 | श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मप्रबन्धन | | संस्कृत एव प्राच्य विद्या संस्थान<br>कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय |
| 91 | वर्तमान समय में गीता में वर्णित शाश्वत ज्ञान की उपयोगिता | सुनील कुमार | संस्कृत एव प्राच्य विद्या संस्थान<br>कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय |
| 92 | प्रबन्धन कौशलता की कुजी: श्रीमद्भगवद्गीता | डा.(श्रीमती) नीरज शमा०ा, | अध्यक्षा, सुंस्कृत ववभाग ,<br>कन्या महाववद्यालय, जालुंधर( पुंजाब) |
| 93 | श्रीमद्भगवद्गीता में व्यंजित कर्म-प्रबन्धन-सन्देश | डॉ.विनोदकुमार, | लवलीप्रोफ़ैशनलयूनिवर्सिटी,<br>फगवाड़ा (पंजाब) |
| 94 | श्रीमद्भगवद्गीतायां जीवनालोक: | डॉ॰ रामचन्द्र | संस्कृतविभाग<br>विश्वविद्यालयमहाविद्यालय<br>कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय:, कुरुक्षेत्रम |
| 95 | विश्वैकीकरणे गीताया महत्वम् | मनु आर्या | संस्कृत विभाग कु.वि. कुरुक्षेत्र |
| 96 | The Tenet of Secularism in Indian Constitution : A Study from the Perspective of Bhagvad Gita | Dr. Dipti choudhary | Asstt. Prof,<br>Department of Law<br>Kurukshetra University<br>Kurukshetra |
| 97 | Eternal Wisdom Of Srimad Bhagavad Gita As A Source Of Inspiration For Millennial Solo Travellers : A Content | Dr. Tripti Choudhary,<br>Aditi Choudhary, | Asst. Prof., Institute of Law , Kurukshetra University,<br>Asst. Prof., IITTM, NOIDA, |



| | | | |
|---|---|---|---|
| | Analysis Of Their Blogs & Memoirs | | |
| 98 | Exploring Self through Kurukshetra Heritage and spiritual Walk | Dr. Surjeet Kumar<br>Dr. Sachin Bansal | Department of Tourism & Hotel Management, Kurukshetra University, Kurukshetra<br>Chief Explorer<br>City Explorers Private Limited \| 206 Ashoka Apartments,<br>Commercial Complex, Ranjeet Nagar, New Delhi – 110008, INDIA |
| 99 | Bhahwad- Gita in Modern Interconnected World | Aman Deep,<br>Rajesh Kharab | Department of Physics, Kurukshetra University, Kurukshetra-136119 |
| 100 | गीता में निष्काम कर्मयोग और संचार का महत्व एक अध्ययन | डा0 कान्ता देवी | सहायक प्रोफेसर<br>पूजा कॉलेज ऑफ एजुकेशन<br>पिपली, कुरूक्षेत्र। |
| 101 | सांख्य दर्शन एवं गीता में प्रकृति एवं पुरुष | मनीषा | संस्कृत एव प्राच्य विद्या संस्थान<br>कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय |
| 102 | गीता में निहित नैतिक मूल्य और संचार एक अध्ययन | डॉ सतीश कुमार | तकनीकी प्रबंधक<br>जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान,<br>कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय,कुरूक्षेत्र। |
| 103 | Bhagavad Gita as the motivation for spiritual Enlightenment: A Study of tourist visiting Kurukshetra | Dr. Ankush Ambardar,<br>Dr. Megha Gupta,<br>Ms. Kusum<br>Mr. Gaurav Garg | Asstt. Professors<br>Department of Tourism & Hotel Management, Kurukshetra University, Kurukshetra<br><br>Researcher, Kurukshetra |
| 104 | Rishikesh: A destination of self- | DrNeerajAggarwal | Assistant Professor, UIHTM, Panjab University, Chandigarh- |



Scanned by CamScanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| | knowledge | | |
| 105. | Reviving Ethics in the Modern World-Insights from Bhagvad-Gita | Dr Vinay Khurania, | Associate Professor, CISKMNV, Pundri Kaithal |
| 106 | Impact of Digital Technology and Social Media on Young People: A Critical Analysis | Shallu Saini | Research Scholar, Kurukshetra University, Kurukshetra |
| 107. | समकालीन परिवेश में गीतोदेश की प्रासंगिकता | Prof . R.K. Deswal | Chairman Department of Philosophy Kuruskhetra University Kurukshetra |
| 108 | गीताभावस्वरुप श्रीकृष्ण | डा. आरती अग्रवाल | Assistant Professor R.K.S.D (P.G) College, Kaithal. |
| 109 | Bhagavad Gita: The Philosophy of Human Excellence in Digital Age | Dr. Sheojee Singh | Govt College of Education, Chandigarh |
| 110 | Srimad Bhagavadgita : The Wisdom for Holistic Life | Dr. Jiwan Bakhshi | Associate Professor of English K.M. Govt. College Narwana Distt. Jind, Haryana |
| 111. | Gita and Self in Digital Age: Implications for Consumption Patterns | Archna Chaudhry* | Department of Economics Kurukshetra University, Kurukshetra |
| 112. | Geeta & Leadership skills | Vikram Singh | Former DG Police,UP Pro Chancellor,Noida International University |
| 113. | The application of TOWS MATRIX in the Mahabharata | Sourabh Bhatt Anmol Sheoran | Research Scholar, Department Of Commerce Kurukshetra University Kurukshetra |
| 114. | Timeless Wisdom Of Srimad-Bhagwad-Gita | Sakshi Ankush | Department Of Commerce Kurukshetra University Kurukshetra |



| | | | |
|---|---|---|---|
| 115. | CRS & Bhagwad Gita | Neeraj & Mahavir | Department Of Commerce Kurukshetra University Kurukshetra |
| 116. | Exploring need hierarchy theory on the basis of Srimada Bhagvad Gita | Mandeep Kumar & Anil Kumar | Department Of Commerce Kurukshetra University Kurukshetra |
| 117. | Leadership and Spirituality | Rampal & Deepak Kumar | Department Of Commerce Kurukshetra University Kurukshetra |
| 118. | Management Ideas In Shrimad Bhagwat Gita | Diksha Yadav & Alisha | Department Of Commerce Kurukshetra University Kurukshetra |
| 119. | Bhagavad Gita:A Management Guru | Mr. Aashish Sangwan & Urmila Sangwan | Department Of Commerce Kurukshetra University Kurukshetra & GCG Panchkula, Haryana |
| 120. | Shifting from management concepts to spirituality through Srimad BhagavadGita | Pooja & Meenakshi | Govt. College , Chhachhrauli & GCG Panchkula, Haryana |
| 121 | Level of Knowledge of Adolescents Regarding Bhagwad Gita | Anju Manocha | Prof. Home Science Govt. P.G College for Women, Panchkula |
| 122. | Religious Tourism: An in-depth study of Hinduism with its Tourism Significance in Kashmir Valley | Prof. Ravi Bhushan Kumar & Hafizullah Dar (Ph.D. | Dept. of Tourism & Hotel Mgt., Kurukshetra University, Kurukshetra. & Research Scholar, Dept. of Tourism & Hotel Mgt., Kurukshetra University, Kurukshetra. |
| 123 | श्रीमद्भगवद्गीता में मानव-कल्याण का मार्ग | C DS Kaushal | संस्कृत विभाग कु.वि. कुरुक्षेत्र |
| 124. | श्रीमदभगवदगीता में प्रयुक्त आत्मा शब्द विमर्श | Dr. Laxmi mor | विभागाध्यक्षा एंव ऐसोसिएट प्रोफसर आर. के. एस. डी. पी. जी. कालेज कैथल |
| 125. | गीता के परिप्रेक्ष्य में धर्म एवं मानवीय मूल्यों | Rahul | Department of Tourism & Hotel Manangement, |



Scanned by CamScanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| | की आधुनिक युग में उपयोगिता | | Kurukshetra University, Kurukshetra |
| 126. | आधुनिक जीवन में गीता की दैवीय सम्पदा द्वारा मनुष्य का वैयक्तिगत, सामाजिक व आध्यात्मिक उत्थान। | डॉ० सोमवीर आर्य<br><br>राहुल | Department of Tourism & Hotel Manangement, Kurukshetra University, Kurukshetra |
| 127. | A Study on Ideology of Management and Geeta; be at odds' | Dr. J.K.Chandel<br><br>Ms. Palak Bajaj | Assistant Professor, Institute of Management Studies, K.U.Kurukshetra, Haryana (India)<br>&<br>Assistant Professor, Institute of Management Studies, K.U.Kurukshetra, Haryana (India) |
| 128. | Exploring 'self' in digital age "The perspective of shrimad bhagwad gita philosophy" | Kiran Khevaria | Dept. of Fine Arts, Kurukshetra University, Kurukshetra. |
| 129. | Timeless Wisdom Of Srimad-Baghwad Gita | Ms Aarti Chauhan and Ms Anjali | Kurukshetra University, Kurukshetra |
| 130. | श्रीमदभगवद् गीता मे मानवतावादी अवधारणा | डा0 रमेश कुमार भारद्वाज | प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,<br>समाज कार्य विभाग,<br>कु0 वि0 कुरूक्षेत्र |
| 131 | Making the Intangible Tangible: Kurukshetra, the Gītā and the World | James M. Hegarty | Professor of Sanskrit and Indian Religions at Cardiff University,UK |
| 132. | Leadership Development for Sustainability: Lessons from Bhagavad Gita | Geeta Sachdeva | Assistant Professor<br>Department: Humanities & Social Sciences, National Institute of Technology (NIT), Kurukshetra |
| 133. | | Renu | Research scholar (Education)<br>Singhania University |



| | | | |
|---|---|---|---|
| 134 | Understanding Self with Bhagwad Gita: A Learner's Perspective in Digital Era | Dr. RAJVIR SINGH | Assistant Professor, Department of Education, Kurukshetra University, Kurukshetra |
| 135. | Bhagwad Geeta- quintessential wisdom of Business Excellence | Dr. Rajan Sharma | Assistant Professor, Institute of Management Studies, Kurukshetra University, Kurukshetra |
| 136. | Srimad Bhagavad Geeta: Book Or Road Map Of Life | Dr. Manju | Assistant Professor of Geogarphy, S.U.S. Govt. College, Matak Majri, Indri (Karnal) |
| 137. | डिजीटल युग में मानव–प्रौद्योगिकी द्वन्द्व एवं उसका श्रीमद्भगवद्गीता के दर्शन में समाधान | डॉ० सोहनपाल सिंह आय | प्रोफेसर एवं विभाग अध्यक्ष<br>दर्शनशास्त्र, गु०कां०वि०वि०, हरिद्वार |
| 138. | 'गीता का अन्तिम श्लोक' एक विश्लेषणात्मक अध्ययन | डॉ वैद्यनाथ लाब | जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू |
| 139. | स्वधर्म और परधर्म की अवधारणा | डॉ कामदेव झा | डी. ऐ वी , कॉलेज पेहवा कुरुक्षेत्र |
| 140. | चार वर्ण की व्युत्पत्ति का सिद्धान्त | डॉ. नरेश भर्गव | बी पी एस खानपुर कला, सोनीपत |
| 141. | श्रीमद्भगवद्गीता में युद्ध से तात्पर्य | डॉ. शीलीक राम | असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यल कुरुक्षेत्र |
| 142. | 'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज' का अर्थ | डॉ. सोहन पाल आर्य | गुरुकुल कागारी विश्वविद्यालय<br>हरिद्वार उत्तराखण्ड |
| 143. | 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' का अर्थ | डॉ. सोमेश्वर दत्त | निर्देशक<br>हरियाणा संस्कृत आकादमी पुंचकुला |
| 144. | गीता द्वितीय अध्याय की समीक्षा | डॉ सुरेंद्र कुमार | असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यल कुरुक्षेत्र |



Scanned by CamScanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| 145. | Role of Mahaprashada for Holistic life management and self exploration: a Bhagavad-Gita Prospective | Dr. Surjeet Kumar & Debasis Sahoo | Dr. Surjeet Kumar<br>Assistant Professor, DTHM<br>Kurukshetra University, Haryana<br>&<br>Assistant Professor, SOTTHM<br>Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala |
| 146. | Bhagwad Gita & Principles of Management | 1Dr. Niti Goyal,<br>2Dr.Anil K. Mittal | Asst. Prof. IGN Collge Ladwa<br>2 Prof. USM, KUK |
| 147. | Inception Of Management Ideas From Bhagavat Gita | Hunny | Student,Department of Commerce<br>Kurukshetra University, Kurukshetra |





NOTES

Scanned by CamScanner

# International Seminar

## Exploring Self in Digital Age - The Perspective of Shrimadbhagavadgita Philosophy

**25-27 November, 2017**

# REPORT

Kurukshetra University Kurukshetra

('A+' Grade, NAAC Accredited)

Scanned by CamScanner